* अथ *

शिवचालीसा

* प्रारभ्यते *

* अथ *

शिवस्तुति चालीसा

* प्रारम्भ *



श्रीः

शिवस्तुति चालीसा

दोहा—जैगणेश गिरिजासुवन, मंगलमूल सुजान।
सकल काज मम सिद्धि हों, हरहु विघन सब आन॥
कहत अयोध्यादास तव, देव अभय बरदान॥
मैं सेवक अज्ञान हूँ, धरू तुम्हारो ध्यान।

चौपाई—जै गिरिजापति दीनद-याला। सदा करत संतन प्रति-

पाला॥भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुंडल नाग फनीके॥ अंग गौर शिव गंगबहाये। मुंडमाल तन छार लगाये॥ वस्त्र खाल बा-घम्बर सोहै। छवि को देखि नाग

मुनि मोहै। मैना मातु की हवै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि भारी॥ कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी॥ करत सदा शत्रुन छय-कारी॥ नंदीगण सोहत हैं कैसे।

सागर मध्य कमल है जैसे ॥ कार्त्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ॥ देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहिं दुःख प्रभु आप निवारा॥ किया

उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहि जुहारी॥ तुरत षडानन आप पठायउ। लव निमेष महँ मारि गिरायउ॥ आप जलंधर असुर संघारा। सुयस तुम्हार

विदित संसारा ॥ त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई । सबहि कृपा करि लीन बचाइ । किया तपहि भागी-रथ भारी । पुरव प्रतिज्ञा तासु पु-रारी । दानिन महँ तुम सम कोउ

नाहीं । सेवक स्तुति करत सदा-हीं ॥ वेद नाम महिमा तुव गाई । अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥ प्रगटी उदधि मथन में ज्वाला । जरत सुरासुर भये बिहाला ।

कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नील-
कंठ तव नाम कहाई॥ पूजन राम-
चन्द्र जब कीन्हा। जीतके लंक
विभीषण दीन्हा॥ सहस कमल में
हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं

पुरारी। एक कमल प्रभु राखेउ
जोई। कमलनैन पूजन चह सोई॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर॥
जय २ जय अनंत अविनासी।

करत कृपा सब के घट वासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहिं सतावैं ॥
भ्रमत रहौं मोहिं चैन न आवै ॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारौं । यहि
अवसर मोहि आनि उबारौ ॥ लै

त्रिशूल शत्रुन को मारौ । संकट
से मोहिं आनि उबारौ । मात पिता
भ्राता सबकोई । संकट में पूछत
नहिं कोई ॥ स्वामी एक है आस
तुम्हारी । आय हरहु अब संकट

भारी। धन निरधन को देव सदा-
हीं। जो कोइ जाँचय वो फल
पाहीं॥ अस्तुति केहि विधि करौं
तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक
हमारी॥ शंकर हौ संकट के ना-

शन। विघ्न विनाशन मंगल का-
रन॥ जोगि यती मुनि ध्यान लगा-
वैं। शारद नारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जै नमः शिवाये। सुर
ब्रह्मादिक पार न पाये॥ जो यह

पाठ करै मनलाई। तापर होत हैं
शंभु सहाई॥ रिनिया जो कोइ
हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन
हारी। पुत्र होन को इच्छा जोई।
निश्चय शिव प्रसाद ते होई॥

पण्डित त्रयोदशी को लावै। ध्यान
पूर्वक होम करावै॥ त्रयोदशी
व्रत करै हमेशा। तन नहिं ताके
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै
रहै कलेशा। शंकर सन्मुख पाठ
सुनावै। मनक्रमबचन जो ध्यान

लगावै॥ जन्म २ के पाप नशावै।
अन्त बास शिवपुर में पावै॥
कहै अयोध्या आशा तुम्हारी।
जानि सकल दुख हरहु हमारी॥
दोहा-नित्त नेम करि प्रातही, पाठ

करौं चालीस। तुम मेरी मन का-
मना, पूर्ण करहु जगदीश॥ मग-
सर छठ हिमवंत ऋतु, संवत चौसठ
जान। अस्तुति चालीसा शिवहिं,
पूर्ण कीन्ह कल्यान॥ इति॥

अथ शिवस्तुति लिख्यते।

दोहा—श्रीगिरिजापति वंदिकर, चरण मध्य शिर नाय।
नाय शिर
कहत अयोध्यादास तुव, मोपर होहु सहाय ॥

कवित्त-नन्दी की सवारी नाग-
अंगीकर धारी नित, संतसुखकारी

नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं। गले
मुंडमाला भारी सिर सोहैं जटा-
धारी, वामअंग में बिहारी गिरिजा
सुतवारी हैं ॥ दानी देख भारी शेष
शारदा पुकारी, काशीपति मद-

नारी करशूल चक्रधारी हैं ॥ कला
उजियारी लख देवसो निहारी,
यश गावैं वेद चारी सो हमारी रख-
वारी हैं ॥१॥ शंभु बैठे हैं विशाला
भंग पीवैं सो विशाला, नित रहैं

मतवाला अहिअंग पै चढ़ाये हैं।
गले सोहे मुण्डमाला कर लिये
डमरू विशाला, अरु ओढ़े मृग-
छाला भस्म अंग में लगाये हैं ॥
संगसुतमाला कर भक्त प्रतिपाला

मृत्यु हरैं अकाला शीश जटा को
बढ़ाये हैं। कहैं रामलाल मोहिं करो
तुम निहाल, अब गिरिजा पति
कसाला जैसे काम को जलाये
हैं ॥ २ ॥ मारा है जलंधर और

त्रिपुर को संहारा जिन, जारा है
काम जाके शीश गंगधारा है।
धारा है अपार जासु महिमा है
तीन लोक, भाल में हैं इंदु जाके
सुखमा के सारा हैं॥ है बात सब

खोवा है हलाहल जानि, भक्तके
अधारा जाहि वेदने उचारा है।
भागजाके हारा है गिरीश कन्या,
कहत अयोध्या सोई मालिक
हमारा है ॥ ३ ॥ अष्ट गुरु जान

जाके मुख वेद बानी, शुभ भवन
में भवानी सुसम्पति लहा करै।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा
ललाट सोहैं, दासन के दास जाके
दारिद दहा करै ॥ चारो द्वार बन्दी

जाके द्वारपाल नन्दी, कहत कवि-
आनन्दी नाहक हाहा करै। जगत-
रिसाय यमराजको कहा बसाय, शं
कर सहायतो भयंकर कहाकरै॥४॥
सवैया-गौर शरीर में गौरि

बिराजत मौर है अवरहिं रीतको
जाके। नागन को उपवीत लसे
कहै अयोध्या शशी भाल में
वाके॥ दान करै पल में फल
चारि औ टारत अंक लिखे बि-

धिना के । शंकर नाम निशंक सदाहि भरोसे रहैं निसि वासर ताके ॥ ५ ॥

दोहा—मगसर मास हेमंत ऋतु, छठ दिन है शुभ बुध्य ।
कहत अयोध्या पाहि तुम, शिव के विनय समुध्य ॥

* इति *

ॐ

शत्रु अनेक अरू मित्र न एक न काई विवक की बात पुछैया । प्रीति प्रतीति की कौन कहे नहिं देख पड़े कोऊ धरैया ।। चोर चवाई चलावत चाल लगावत जाल बृथा निरदैया। ऐसे अनाथ दुखी जन को तुमहीं शिव जी प्रतिपाल करैया ॥ ६ ॥ सांप की सेली सों माल कपाल जटान में गङ्ग बिराजत सोऊ। चन्द्रकला शशि सोहत है हिमवन्त सुता अध अङ्ग में सोऊ॥ वेद पुराण प्रभाषत हैं पर थाह न पाय सकैं कहैं ओऊ। मेरी गरीबी पै गौर

करो बिन तेरी कृपा न कृपा करै कोऊ ॥७॥
नहिं चाहत हौं धन धाम कछू समझावत
पूत कपूतन को। नहिं मानत बात भली
विधि सों रचियो तिनके हित कूटन को ॥
गुरु ज्ञान दियो भय दूरि कियो अब
क्यों डरिये नर भूतन को। शम्भु शिवा
वर दायक हैं सब भांति अनन्द सदा
हम को ॥८॥

॥ आरती शिव जी की ॥

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन बृषबाहन साजे ॥जय०॥
दो भुज चार चतुर्भुज दश मुख ते सोहैं।
तीनों रूप निरखता त्रिभवन जन मोहैं ॥जय०॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥जय०॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक प्रेतादिक संगे ॥जय०॥
है कर मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता।

जग कर्ता जग भर्ता जग सँहार कर्ता ॥ जय० ॥
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर मध्ये तीनों ही एका॥ जय० ॥
त्रिगुण आरती जो कोइ शिव जी की गावै।
कहत शिवानँद स्वामी मन बांछित फल पावै॥
जय० ॥

॥ शिव जी की स्तुति ॥

हे दीनबन्धु दयालु शङ्कर जानि जन अपनाइये।
भवधार पार उतार मोकूं निज समीप बुलाइये॥
जाने न जाने पाप मेरे तिनहिं आप नशाइये।
कर जोरि जोरि बहोरि मांगौं शम्भु दर्श दिखाइये॥ (५)
देवीसहाय सनाय शिव को प्रेम सहित जो गावही।
जन योनि से छुट जाय सो नर सर्वदा सुख पावही॥
बार बार बिनती करूं, धरूं चरण में माथ।
अब मोहिं भक्ती दीजिये, हे गिरजापति नाथ॥
शिव समान दाता नहीं, विपत्ति विदारन हार।
लज्जा मेरी राखियो, बरधा के असवार॥

॥ शिव पूजन से फल प्राप्ति ॥

जल के चढ़ाये यम लोक ते उबार लेत, चंदन के चढ़ाये पाप ताप हर लेत हैं। चावल के चढ़ाये सुख सम्पति महान देत, दीप के दिखाये दिव्य दृष्टि कर देत हैं॥ भाग औ धतूर के चढ़ाये निज लोक देत, बेल के चढ़ाये जौन चाहौ वर देत हैं। हर के कहत शिव हरत कलेश सब, गाल के बजाये निहाल कर देत हैं॥ ×

मगंसर

॥ पूजन विधि ॥

प्रथम त्रयोदशी के दिन शिव जी का व्रत करे और नीचे लिखे हुये मुल मन्त्र से शिव जी को स्नान करा चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ा कर धूप दीप नैवद्य द्वारा विधि पूर्वक शिव जी का पूजन करे तत्पश्चात शिव चालीसा और शिवाष्टक की पाठ करके फिर एक हजार मुल मन्त्र का जाप करे तिस के उपरान्त शिव जी की स्तुति कर पूजन समाप्त करे। इसी तरह २२ दिन अनुष्ठान करने से कार्य सिद्ध होगा।

मूल मंत्र-ॐ ह्रौं जूं सः ॐ शिवाय नमः

॥ शिव प्रार्थना ॥

शङ्कर महादेव देव सेवक सुर जाके ॥ टेक ॥
भस्म अङ्ग शीस गङ्ग, बाहन बल अति प्रचण्ड ।
गौरी अर्द्धङ्ग, संग भङ्ग रङ्ग छाके ॥ शङ्कर० ॥
लपटि झपटि जात व्याल, ओढे तन मृग छाल ।
मुण्ड माल चन्द्र भाल, दृग विशाल जाके ॥ शङ्कर० ॥
धयावत सुर नर मुनेश, गावत गिरिजा गणेश ।
पावन नहिं पार शेष, ब्रह्मादि थाके ॥ शङ्कर० ॥
बरणत यश तुलसीदास, गिरिजा पति चरण आश ।
ऐसे वर भेष नाथ, भक्त हेत राखे ॥ शङ्कर० ॥

* इति *

शिवस्तुति चालीसा

* समाप्त *